डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½

# राम-रहीम

# भूतमहल

# भूत महल

## डबल सीक्रेट एजेन्ट ००½
## राम-रहीम

डाल दो हथकड़ियां।

सम्भालिये इंस्पेक्टर अंकल, देश के इन दुश्मनों को।

आह...!

जरा इसे भी।

उफ...!

डबल सीक्रेट एजेन्ट ००½ राम-रहीम। भारत के बाल जासूस, जिन्होंने अपने चमत्कारिक कारनामों से भारत का नाम संसार में ऊंचा कर दिया था। बड़े-बड़े अपराधियों को कानून के शिकंजे में जकड़कर जेल पहुंचाने का जिन्हें श्रेय प्राप्त था।
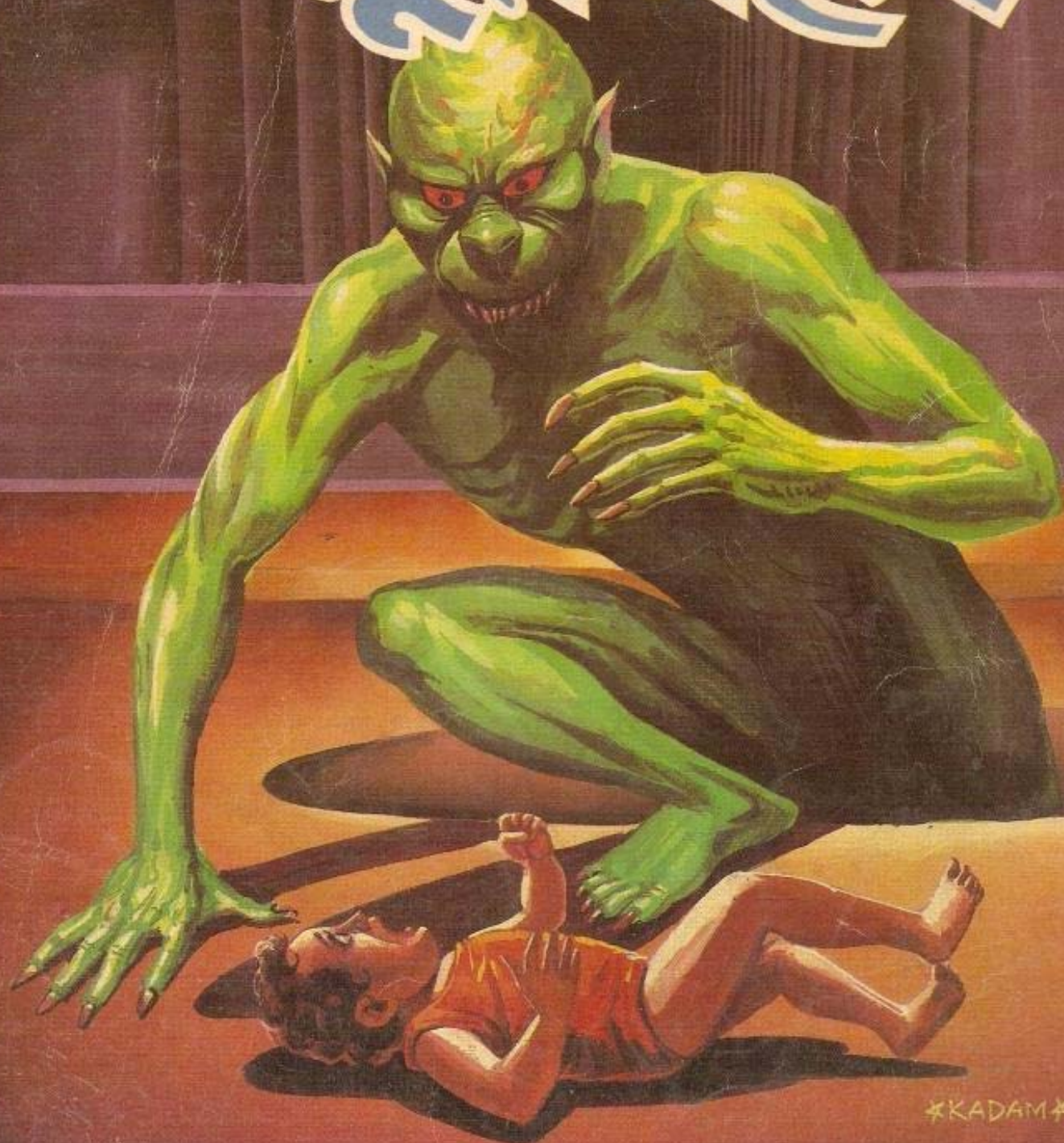
कुछ दिनों बाद, एक रात शहर के निकट ही बसे एक गांव में ...
हाय मेरा लाल!

शान्त हो जाओ बहन, ईश्वर को शायद यही मंजूर था।

बेचारी दुखिया।
अब इस बेचारी का इस दुनिया में कोई सहारा नहीं रहा।

रात गहरी होती जा रही है, हमें लाश को ले जाने में देरी नहीं करनी चाहिये।
हां। तुम ठीक कहते हो। आओ चलें।

नहीं - नहीं। मेरे लाल को मुझसे मत छीनो। आह!
धैर्य रखो बहन, जो होना था वह तो हो ही गया। लाश को बहाना जरूरी है, वरना सड़ जायेगी।

बच्चे की मां को रोते-बिलखते छोड़ कुछ व्यक्ति लाश को लेकर पास की नदी की ओर चल पड़े।
हाए मेरा लाल! अरे, कोई उन्हें रोको।
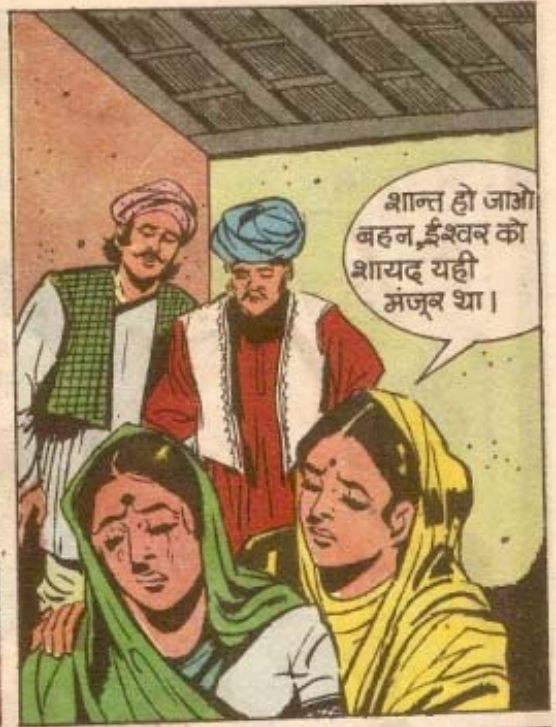
लेकिन शव को लेकर जा रहे लोगों को इसका तनिक भी गुमान नहीं था कि एक खौफनाक इंसान की भयानक आंखें उन पर टिकी हैं।

और फिर अगले ही क्षण भयानक आंखों वाला इंसान उनके सामने था।
आ...ई...!
भ..भूत...!
ही..ही..ही..!

उस भयानक प्राणी को कोई भूत-प्रेत समझ, बच्चे का शव वहीं फैंक सभी भाग खड़े हुए।
अरे बाप रे भूत...भागो...!
भागो! भागो!
बचाओ!

हो... हो.. ही.. ही.. हो.. हो..!

लोगों के नजरों से ओझल हो जाने के पश्चात्--
ही..ही..ही...! बुजदिल भाग गये, मुझे भूत समझे थे।

वह भयानक इंसान बच्चे के शव को उठाकर किसी कुत्ते के समान चाटने लगा।
शिकार अच्छा है।
चट.. चट...

फिर कुछ क्षणों बाद वह उस बच्चे की लाश को कंधे पर डाल कर एक तरफ दौड़ पड़ा।

जल्दी ही वह दौड़ता हुआ शहर के एक वीरान स्थान पर बनी पुरानी हवेली के सामने जा पहुंचा।

फिर वह तेजी से उस हवेली के अन्दर प्रविष्ट हुआ।
वह हवेली पूरे शहर में भूत महल के नाम से चर्चा का विषय बनी हुई थी।

उस भूत महल के साथ बहुत ही भयानक किस्से जुड़े थे। असलियत का किसी को भी पता नहीं था। पुलिस भूत महल में प्रविष्ट होने पर प्रतिबंध लगा चुकी थी।

कुछ देर बाद वह हवेली के नीचे बने लम्बे-चौड़े तहखाने में पहुंचा...
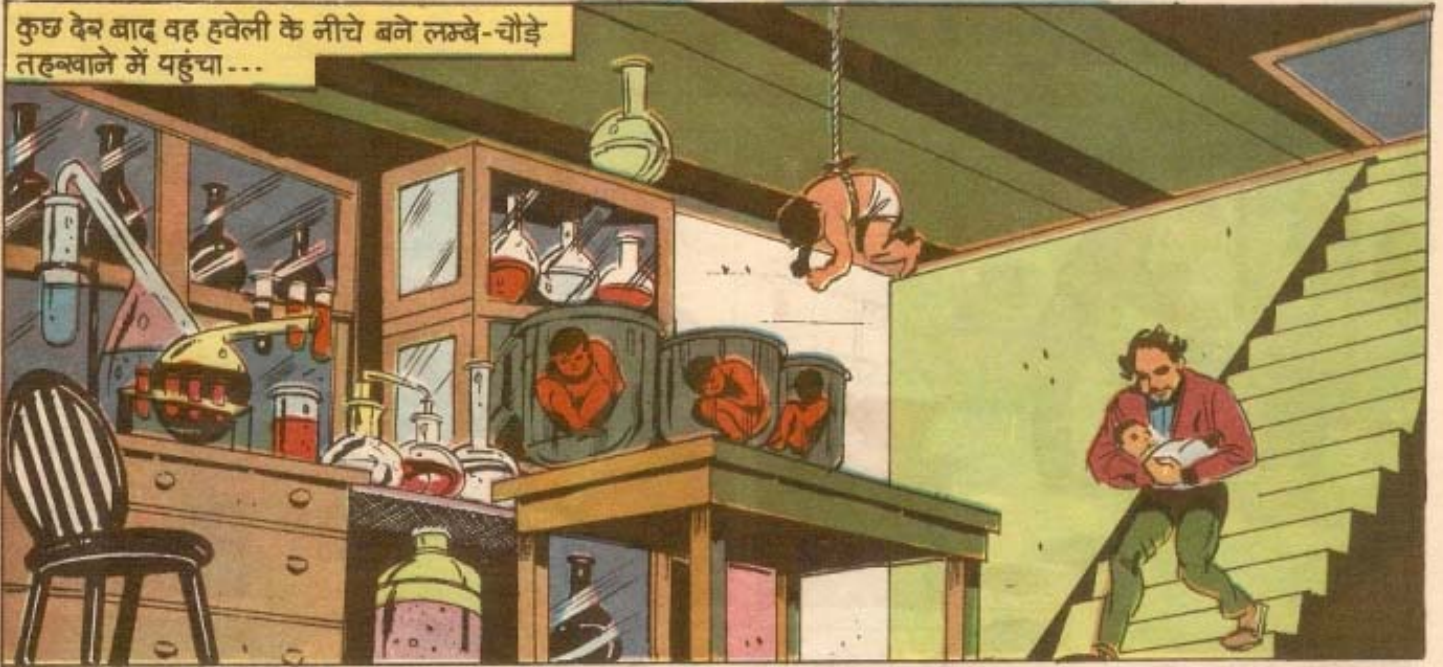
बच्चे की लाश को उसने एक खाली टेबिल पर सीधा लिटा दिया।
मैं... डॉ. शैतान, इसे जिंदा करके दूसरा ड्राक्यूला बनाऊंगा..

और दुनिया से प्रतिशोध लूंगा।

उसके बाद वह एक अन्य टेबिल के निकट पहुंचा।
इस द्रव्य की केवल कुछ बूंदें...

उस लाश में प्राण फूंक उसे एक ड्राक्यूला बालक के रूप में परिवर्तित कर देंगी और उसके बाद--हा..हा..हा..मेरा प्रतिशोध आरंभ होगा।

फिर उसने वह इंजेक्शन उस मृत बच्चे की बांह में लगा दिया।

कुछ ही क्षणों पश्चात् बच्चे के शरीर में भयानक परिवर्तन होने लगा।

और फिर अगले ही पल वह जीवित होकर उठ बैठा।
हा..हा..हा...! मेरा प्रयोग सफल रहा।

भूख। भूख। मुझे खाना चाहिये।
जरूर मिलेगा।

डॉ. शैतान खून से भरे एक मर्तबान को उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला —
लो, इसे पीकर अपनी भूख शांत करो।

अब मेरा प्रतिशोध अवश्य पूरा होगा।

रक्त के पीते ही ड्राक्यूला बालक में जैसे नई शक्ति आ गई।
क्या आज्ञा है स्वामी ?
बिल्कुल ठीक, यह मुझे अपना स्वामी ही समझता है।

डॉ. शैतान ने कहा--
बच्चे हमारे दुश्मन हैं, कल से तुम्हें ही बच्चों का शिकार करना है। इसीलिए मैंने तुम्हें जीवन दिया है।
जो आज्ञा स्वामी।

फिर दोनों बच्चों का मांस और खून पीकर प्रसन्नता से नाचने लगे।
हा.. हा. .. हा..!
ही.. ही.. .ही--!

इसके बाद हर रात ड्राक्यूला बालक बच्चों का शिकार करने निकलने लगा।
अहा शिकार--!

उफ्! प्रेत!
आ..ई...!

बचाओ! मेरा बच्चा!

शिकार हाजिर है मालिक।
शाबाश! ड्राक्यूला।

ड्राक्यूला बालक के भयानक कारनामों से पूरे शहर में आतंक छा गया।
दरवाजा अच्छी तरह बन्द कर लो, उस प्रेत का कोई भरोसा नहीं।

मुझे डर लग रहा है स्वामी।
घबराओ नहीं, बाहर मैंने पहारेदार नियुक्त कर दिये हैं। कुत्ते भी खुल छोड़े हैं।

जल्दी सो जाओ बेटे, वरना वह शैतान प्रेत तुम्हें खा जायेगा।
हे ईश्वर, न जाने आज किस मासूम की जान जायेगी।

प्रतिदिन किसी न किसी बच्चे के अपहरण के साथ-साथ शहर में बढ़ते आतंक को देख पुलिस भी परेशान हो उठी।

ड्राक्युला-ड्राक्युला-ड्राक्युला! समझ में नहीं आता कि आखिर यह बला क्या है? शहर के विभिन्न हिस्सों से पच्चासों बच्चों का अपहरण हो चुका है और उनका कोई सुराग नहीं मिला।

पुलिस कमिश्नर मि.पाण्डे ने एक विशेष मीटिंग बुलाई--
सर, हम काफी कोशिश करने के बावजूद उसे पकड़ नहीं पाये।
वह हवा की तरह आता है और किसी भी बच्चे का अपहरण करके हवा की तरह चला जाता है।

सर, आज तक हम यह भी मालूम करने में सफल नहीं हो पाये कि वह कहां से आता है और कहां जाता है।
यस सर! इसके साथ ही यह भी मालूम नहीं हो पाया कि वह आखिर बच्चों का ही अपहरण क्यों करता है।

सर, मुझे तो यह किसी प्रेत का काम लगता है--- शायद भूत महल वाले प्रेत का काम।
बकवास! मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं।

यह किसी भूत-प्रेत का काम नहीं हो सकता, बल्कि किसी भयानक एवं चालाक अपराधी का काम है। आप लोग उसे हर कीमत पर पकड़िये, वरना पुलिस विभाग बदनाम हो जायेगा।

आपका मतलब है कि यह किसी ऐसे अपराधी का काम है, जो बच्चों का दुश्मन है।

बिल्कुल! शहर में गश्त बढ़ा दीजिये और हर संदिग्ध स्थान पर नजर रखिये, मुझे विश्वास है कि आप लोगों की जरा-सी सतर्कता से वह अपराधी पकड़ में आ जायेगा। अब आप लोग जा सकते हैं।
राईट सर।

लेकिन काफी खोजबीन करने के पश्चात् भी पुलिस ड्राक्युला बालक को खोजने में असफल रही।
जबकि डॉ. शैतान का उत्पात बढ़ता ही जा रहा था।
जी नहीं। अभी तक वह शैतान पकड़ा नहीं जा सका।
कुछ पता नहीं चला सर।
क्या कहा! ड्राक्युला एक और बच्चे को उठा ले गया!
प्रतिशोध! प्रतिशोध!!
हम उसे पकड़ने की पूरी कोशिश कर रहे हैं सर।
उसे भूत-महल की ओर देखा गया है।
घेरा डाल दो।
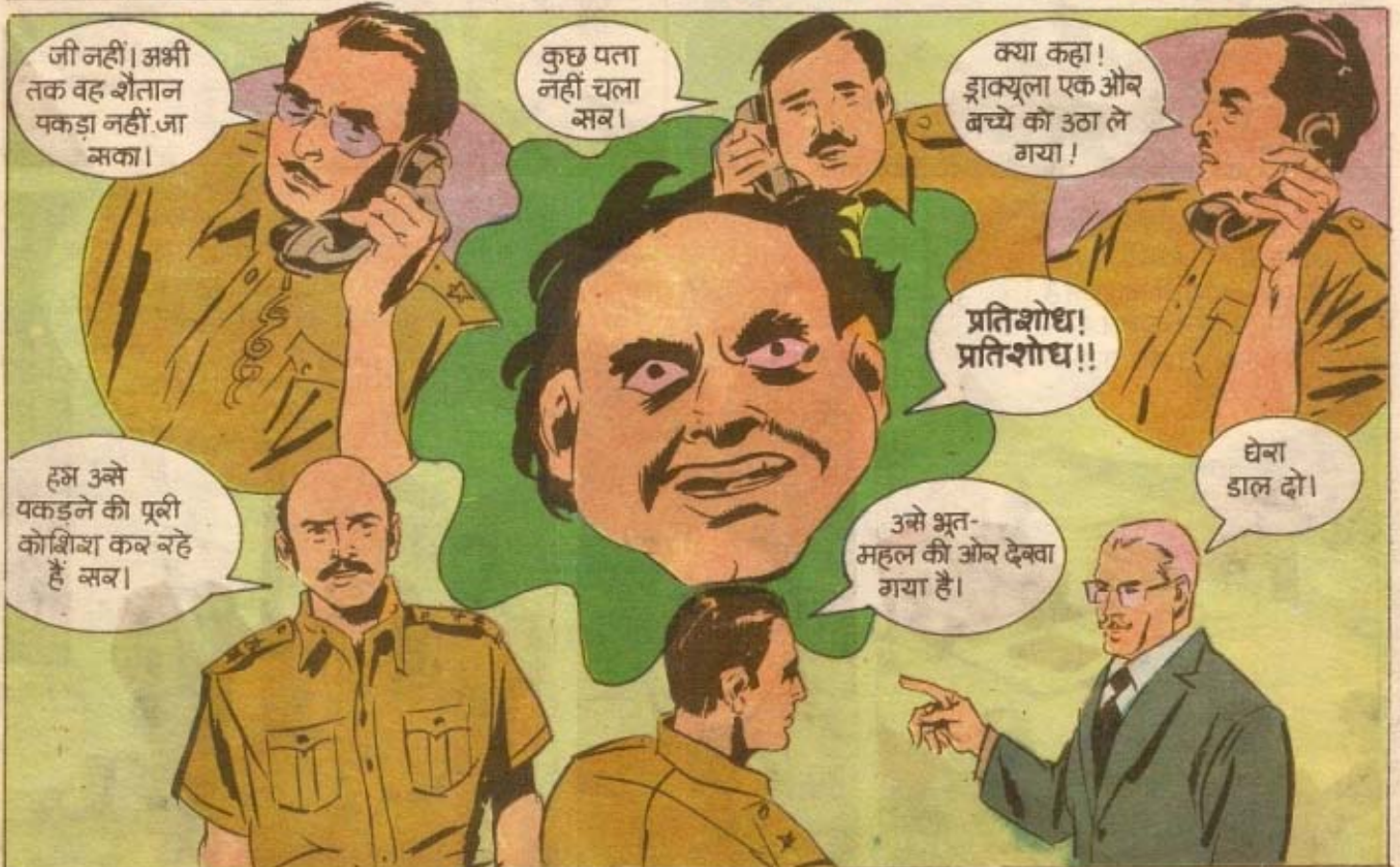
सूचना मिलने पर पुलिस ने भूत-महल पर शीघ्र छापा मारा, लेकिन वहां भी ड्राक्यूला बालक का कोई सुराग नहीं मिला।
यहां तो कोई भी नहीं है सर।
यस सर। लगता है वर्षों से इसमें किसी ने कदम तक नहीं रखा।
हूम। वापस लौटो।

पुलिस की नाकामयाबी और शहर में फैले आतंक को देखते हुए बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ मि. मुखर्जी ने आखिरकार एक दिन राम-रहीम को काल किया।
मैंने तुम्हें बच्चों के अपहरण और उससे सम्बंधित ड्राक्यूला बालक के केस के सिलसिले में बुलाया है।
हम जानते थे चीफ। हम उसके बारे में अखबारों में काफी पढ़ चुके हैं।

शाबाश। मैं चाहता हूं कि इस केस को तुम दोनों हल करो। पुलिस की नाकामयाबी से शहर में आतंक और रोष का वातावरण बढ़ता ही जा रहा है। यदि अपराधी जल्द से जल्द पकड़ा न गया तो जनता का सरकार से विश्वास उठ जायेगा, जिससे स्थिति बिगड़ सकती है।

आप चिंता न करें चीफ अंकल, बच्चों का अपहरणकर्ता अब ज्यादा समय तक आजादी की सांस नहीं ले पायेगा।
मुझे तुमसे यही आशा थी।
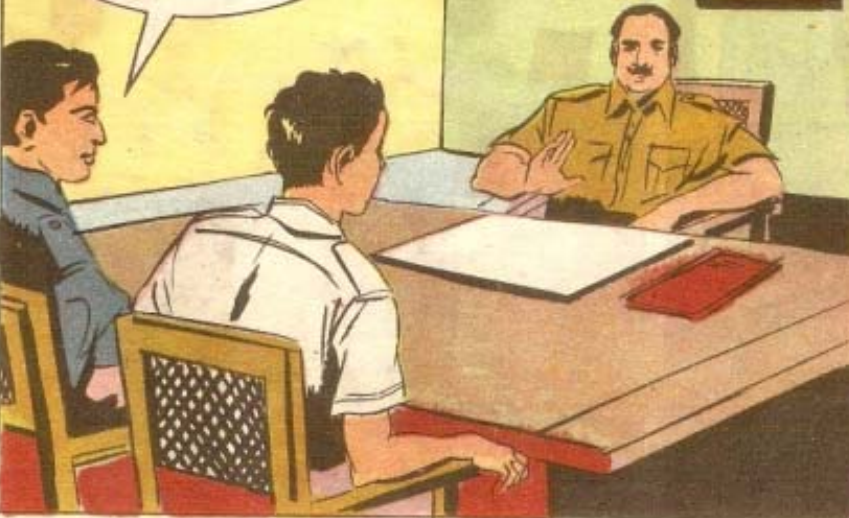
लेकिन राम, यदि बच्चों के अपहरण के पीछे वास्तव में भूत-प्रेतों का हाथ हुआ तो...?
मुझे विश्वास नहीं होता रहीम कि इस कांड के पीछे भूत-प्रेतों का हाथ होगा।

वह क्यों ?
यदि वास्तव में ही यह किसी भूत-प्रेत का ही काम होता, तो मुख्य प्रश्न यह उठता है कि उसे बच्चों से ही दुश्मनी क्यों, बड़ों से क्यों नहीं ?

शाबाश राम। तुमने वास्तव में बहुत दूर की सोची है, यही वह प्रश्न है, जिसने मुझे भी यह सोचने के लिये बाध्य किया है कि इस कांड के पीछे अवश्य ही किसी चालाक अपराधी का हाथ है और वह अपने किसी विशेष उद्देश्य के तहत बच्चों का अपहरण कर रहा है। मुझे विश्वास है कि तुम यह केस जरूर हल कर पाओगे।

विश्वास रखें चीफ, हम कोई कसर नहीं उठा रखेंगे, अब आज्ञा दीजिये।
मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं मेरे बच्चो।
नमस्कार चीफ।
उसके बाद राम-रहीम विदा लेकर घर लौट पड़े।

उधर इंस्पेक्टर खान दिन भर ड्राक्यूला बालक की खोजबीन से थका काफी रात गये घर वापस लौटता है।
मौसम काफी खराब था।

क्या बात है, लौटने में इतनी देर कर दी ?
वही कम्बख्त ड्राक्यूला बालक का चक्कर।

क्या कुछ पता चला उस शैतान का ?
कुछ भी नहीं।

कहीं यह सचमुच किसी भूत-प्रेत का तो काम नहीं?
जब तक कोई ठोस सबूत न मिल जाये, कुछ नहीं कहा जा सकता।

रात काफी हो गयी है, आप हाथ-मुंह धो लीजिये, मैं खाना गर्म किये देती हूं।
नहीं, मुझे भूख नहीं है। मैं सोऊंगा।

आज मौसम बहुत खराब है।
हे खुदा! न जाने क्यों मुझे आज बड़ा डर लग रहा है

किसी भी समय जरूरत पड़ सकती है।
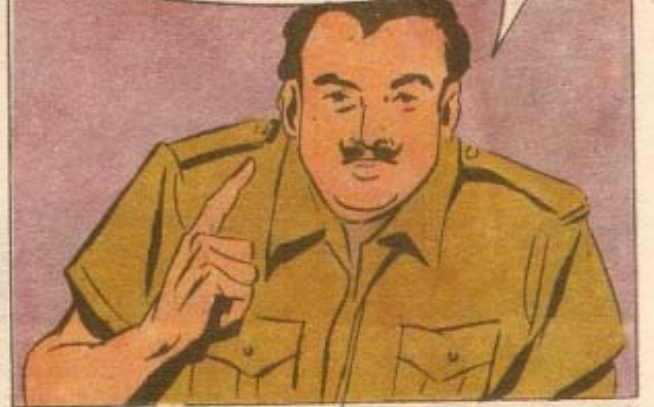
आधी रात गये इंस्पेक्टर खान के बैड रूम की खिड़की के नीचे एक साया आकर रुका।

आस-पास सन्नाटा पाकर वह उचक कर खिड़की पर चढ़ गया और कमरे के भीतर झांकने लगा।

फिर सभी को गहरी नींद सोया देख वह खिड़की खोलकर कमरे में कूद गया और बच्चे के पालने की ओर बढ़ा।

तभी बच्चे के रोने की आवाज सुनकर इं. खान की पत्नी की आंख खुल गयी।
नहीं... ई..ई..

अपनी पत्नी की चीख सुनकर इंस्पेक्टर खान की भी आंखें खुल गयीं।
क्या हुआ? ओह, ड्राक्यूला बालक!

सारा माजरा समझते ही इंस्पेक्टर खान ने तकिये के नीचे से रिवाल्वर निकाल लिया।
रुक जाओ, वरना मारे जाओगे।
धांय! धांय!

परंतु ड्राक्यूला बालक पर गोलियों का कोई असर नहीं हुआ।
ही..ही..ही..!
उफ! इस पर तो गोलियों का भी असर नहीं होता।

तभी ड्रैक्यूला बालक ने इंस्पेक्टर खान पर झपट्टा मारा - -

इंस्पेक्टर खान द्वार से टकराया और बेहोश हो गया।

उसी रात नाईट शो देखकर राम-रहीम एक फिल्म हाल से बाहर निकले।
DIL
MANOJ 70 MM

देखते ही देखते आस-पास वीरानी छा गयी। लोगबाग कोई न कोई सवारी पकड़कर जा चुके थे।
ओह! मौसम बहुत खराब है।
कोई बात नहीं, आओ चलते हैं। हमारे काम का वक्त शुरू हो गया है।

वे दोनों पैदल ही एक तरफ बढ़ने लगे।
'आखिर ऐसा कब तक चलता रहेगा राम, दिन भर सोना और रात को उल्लुओं की तरह जागना।
जब तक वह शैतान ड्रैक्यूला बालक हाथ नहीं आता।

ओफ!
डर गये?
हां, बिजली बड़े जोर से कड़की थी।

तभी दूर कहीं से किसी बच्चे के रोने की आवाज उनके कानों में पड़ी।
आ..ऊ...ऊ...ऊं..ऊ..!
सुनो रहीम! कुछ सुनाई दे रहा है।
हां,कोई बच्चा रो रहा है।

ऊ..ऊ..ऊ..!
आओ देखें, आवाज शायद उस तरफ से आ रही है।
लेकिन इस वीराने में कोई बच्चा ?

देर मत करो, टार्च निकालो और जल्दी चलो।
चलो।
राम-रहीम आवाज की दिशा में दौड़ पड़े।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर उन्हें एक भयानक दृश्य दिखाई दिया
ओह! वह देखो।
उफ! कोई प्रेत लगता है। उस-के कंधों पर शायद कोई बच्चा है।

प्रेत नहीं। यही है बच्चों का दुश्मन ड्राक्यूला बालक, आओ पकड़ते हैं इसे।
सावधानी से राम इसे पकड़ना, खतरनाक भी हो सकता है।

रुक जाओ, भागना बेकार है।
यदि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो गोली मार देंगे।

तभी ड्राक्यूला बालक ने पलटकर राम-रहीम पर आक्रमण किया।
उफ।
आह..!

ही..ही..ही..!
रहीम सावधान।
कम्बख्त के शरीर पर कांटे हैं।

आ..ऊ...ऊ..!

हुर्र...हुई..हुप्प..!

आह! उफ। मर गया

घबराना नहीं रहीम।
आ.. ऊ.. ई..!

ड्राक्यूला बालक के बंधन से मुक्त होकर रहीम सड़क पर गिरा।
उफ्। भयानक।
हुर्र-हुर्र-हुप्प-।
ओह। टार्च।

अगले क्षण--
अ..ई..ई...!

प्रकाश से ड्राक्यूला बालक अत्यधिक भयभीत हो उठा।
अब बचकर कहां जाओगे शैतान हत्यारे। लाओ, बच्चे को हमारे हवाले करो।
ओह! प्रकाश से यह भय खाता है।

फिर अचानक वह घबराया हुआ-सा भाग खड़ा हुआ।
रहीम, वह भाग रहा है, पकड़ो उसे।
बचकर कहां जायेगा? आओ।

फिर जैसे ही ड्राक्यूला बालक भूतिया महल में भागता हुआ दाखिल हुआ...
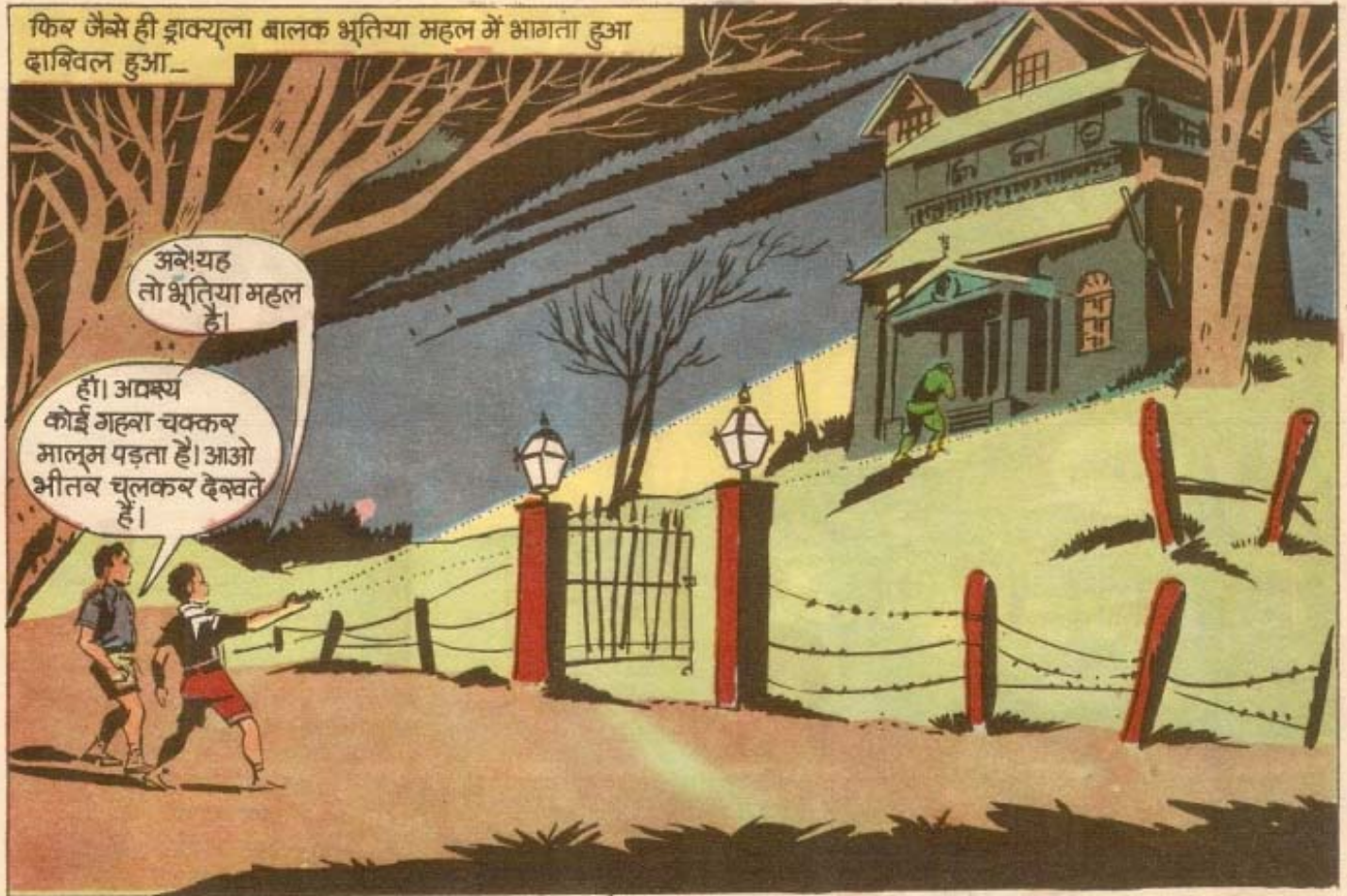
अरे! यह तो भूतिया महल है।

हाँ। अवश्य कोई गहरा चक्कर मालूम पड़ता है। आओ भीतर चलकर देखते हैं।

फिर राम-रहीम को ऐसा महसूस हुआ, जैसे वह भूतिया हवेली हिल रही हो।
राम देखो हवेली हिल रही है।
हे ईश्वर!
अगले ही क्षण हवेली के प्रांगण में उन्हें बहुत से मानव कंकाल भयानक आवाजें निकालते हुए नाचते दिखाई दिये।

भाग जाओ। भाग जाओ। मारे जाओगे।
हा.. हा..हा..।
आ... हुम्म...हुम्म.. हुप्प..।
ई..ई..ई... हू..हू..।

साथ ही तेज वर्षा भी होने लगी।
राम, अब हमें तुरंत यहां से चल देना चाहिए।
घबराओ नहीं रहीम, हमें यहां रुककर आजरा देखना चाहिए। आखिर एक बच्चे की जिंदगी खतरे में है।

उसी समय एक विचित्र एवं भयानक किस्म का बूढ़ा उनके पीछे प्रकट हुआ।
हा..हा.. हा..!
अरे बाप रे भूत।
?

तुम कौन हो बाबा? और इस तरह क्यों हंस रहे हो?
राम आज मरवा करही छोड़ेगा। भला भूत-प्रेतों का भी कोई मुकाबला कर सकता है।

मैं तुम्हारी मूर्खता व नादानी पर हंस रहा हूं। क्यों सब कुछ जानते-बूझते भी तुम यहां खड़े अपनी मौत का इंतजार कर रहे हो? लौट जाओ।

चुप रहो डरपोक। चीफ का आदेश याद नहीं?

एक बार फिर सोच लो राम। कहीं बूढ़े की बात सच न हो जाये।

भीतर प्रविष्ट होने पर...
अरे बाप रे।
डरो मत, अंधेरे के पक्षी हैं केवल।

तुम बेकार में अपने प्राण खतरे में डाल रहे हो राम, यहां की हालत देखकर साफ कहा जा सकता है कि यहां सदियों से कोई नहीं रहता। यहां भूत-प्रेतों का ही वास होगा।
अभी मालूम हो जायेगा।

अचानक ही एक भयानक चीख हवेली में इस प्रकार गूंजी मानो किसी इंसान को बेदर्दी से काटा जा रहा हो।
ओह! यह चीख कैसी?
आ...ई...ई...ई...!
अवश्य ही कोई प्रेत किसी का खून चूस रहा होगा। मेरी बात मानो, तुम भी भाग चलो यहां से।

तुम बेकार में भयभीत हो रहे हो रहीम। हो सकता है कोई मुसीबत में हो, हमें उसकी मदद करनी चाहिए, आओ।
या खुदा रक्षा करना, इसका तो दिमाग खराब हो गया है, भूत-प्रेतों से मुकाबला करनें चला है।

तभी जैसे किसी की का साया उनके समीप से हवा में हिलौरें लेता हुआ गुजरा।
य.. यह क्या?
प्र.. प्रेतनी। खुदा रक्षा करना।

फिर वह रहस्यमय साया अगले ही पल उनकी नजरों से ओझल हो गया।
अब भी वक्त है, भाग चलो राम।
नहीं। मैं यह रहस्य जाने बिना अब नहीं लौटूंगा।

लेकिन भय से रहीम की हालत खराब थी।
मुझमें अब और चलने की शक्ति नहीं है राम।
ठीक है, तुम यहीं रुको, मैं देखता हूं।

रहीम को वहीं छोड़ राम आगे बढ़ा।
या खुदा, इसकी रक्षा करना।

परंतु राम अभी कुछ ही दूर आगे बढ़ा होगा कि--
आ...ई...ई...बचाओ...ई...ई...ई...
यह तो रहीम की चीख मालूम पड़ती है। जरूर कोई गड़बड़ है।

राम तेजी से पलटकर उस स्थान पर पहुंचा, जहां रहीम को छोड़ा था।
ओह! यह तो बेहोश हो गया लगता है।

होश में आओ रहीम। क्या हुआ तुम्हें?

राम ने रहीम की बेहोशी का कारण जानने के लिए टार्च का प्रकाश इधर-उधर फैका।
न जाने इसे एकाएक क्या हुआ?
ओह! बड़ा ही भयावना वातावरण है।

फिर जैसे ही टार्च का रुख उसने छत की ओर किया --
हे मेरे ईश्वर, यह क्या?

तभी रहीम थोड़ा होश में आकर पुनः चीख उठा --.
आ... ई.. ई..।

रहीम को अत्यधिक भयभीत देख राम भी घबरा गया।
होश में आओ रहीम। यह मैं हूं राम। क्या हुआ तुम्हें?

त...तुम कौन हो? मैं कहां हूं?
अरे, क्या हो गया तुम्हें? मैं राम हूं। हम इस समय भूत महल में हैं।

भूत महल! हा..हा.. हा..फिर कोई नहीं बचेगा। मैं भी नहीं। हो..हो..हो..!
लगता है इसके दिमाग पर कोई जबरदस्त सदमा पहुंचा है। शायद छत पर लटकी लाश को देखकर।

बाध्य होकर राम-रहीम को होश में लाने के लिए थप्पड़ मारता है।
तड़ाक तड़ाक
आह!

थप्पड़ खाकर रहीम पूरी तरह होश में आ गया।
मैं कहां हूं? ओह, तुम!
क्या हुआ था तुम्हें?

व..वह लाश!
ओह!

राम ने चौंककर टार्च का प्रकाश पुनः छत की ओर डाला।
अरे! वह लाश कहां गई?
अब तो तुम्हें विश्वास करना चाहिये राम कि यहां भूतों का वास है। अब जल्दी निकल चलो यहां से।
फिर वे वापस लौट जाते हैं।
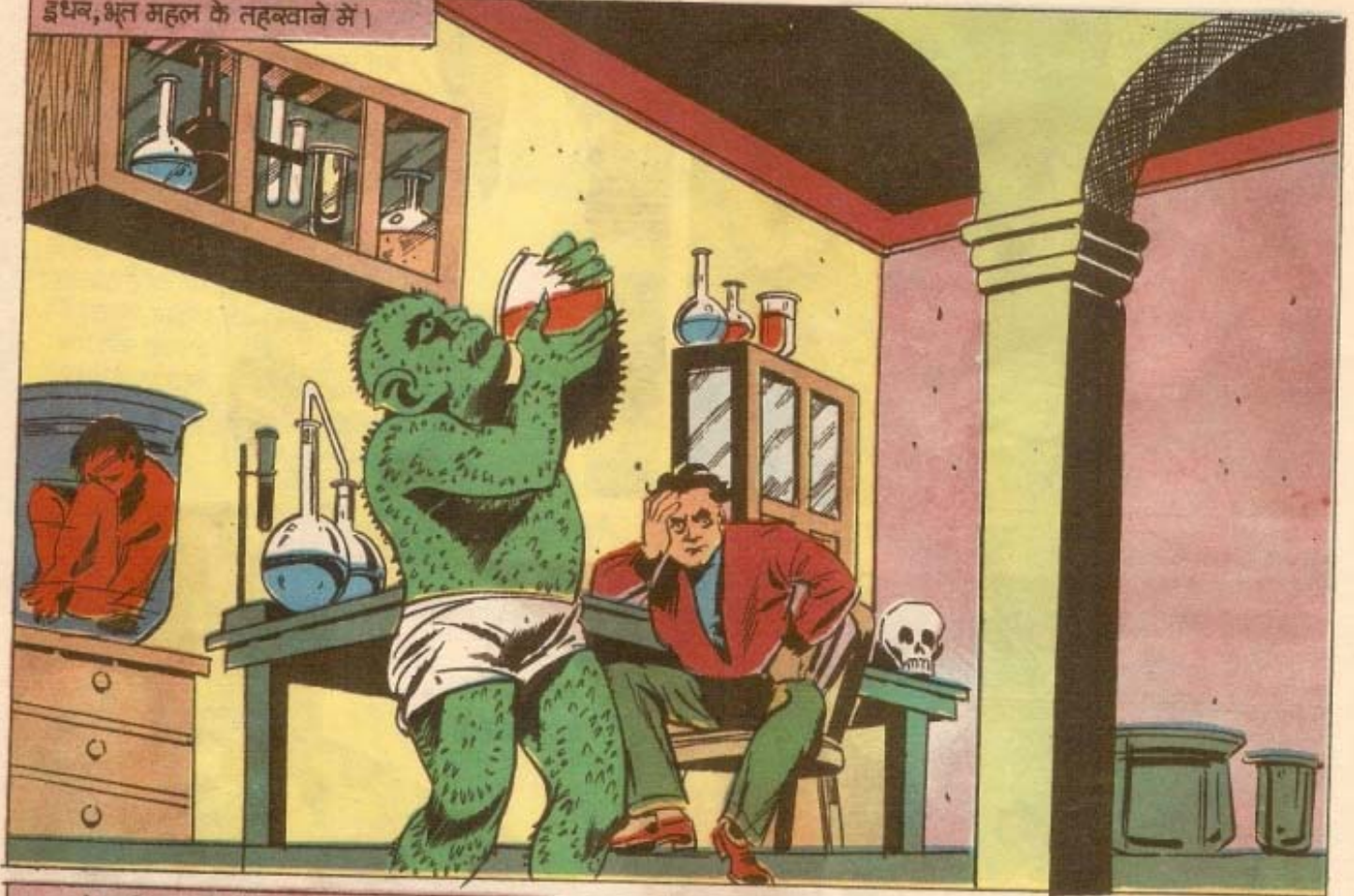
इधर, भूत महल के तहखाने में।
खून से भरी कटोरी पीने के पश्चात--
स्वामी, क्या तुम भोजन नहीं करोगे?
मैं उनका खून पीकर ही भोजन करूंगा, जो तुम्हारा पीछा करते हुए यहां तक आये थे।
आप उनके लिये इतने परेशान क्यों होते हैं?

डॉ. शैतान ने ड्राक्यूला को राम-रहीम की असलियत बताई।
ओह, तो यह बात है। आज्ञा करें स्वामी। क्या दोनों का शिकार अभी करना है।
हाँ, लेकिन यहां नहीं, बल्कि उनके घर पर।

अब मैं उन दोनों का ही भोजन करके अपनी भूख मिटाऊंगा, लेकिन सावधान, वे साधारण शिकार नहीं।
जो आज्ञा स्वामी।

सहसा डॉ. शैतान को कुछ ध्यान आया।
तुमने आज के शिकार की लाश हवेली के बाहर डाल दी है ना?
हाँ स्वामी! पुलिस एक बार फिर भ्रम में पड़ जायेगी और हमारा भूत महल पहले के समान आबाद रहेगा।

उधर, काफी रात गये तक राम-रहीम के न लौटने पर राम के माता-पिता, राधादेवी और कर्नल राघव चिंतित हो उठे।
इतनी रात हो गई, वे दोनों अभी तक नहीं आए।
मुझे तो डर लग रहा है। आपको उन्हें खोजना चाहिए।

घबराओ नहीं राधा, शायद किसी कारणवश उन्हें देर हो रही हो।
यह देरी किसी संकट के कारण भी हो सकती है। शहर में बच्चों के हत्यारे का आतंक फैला हुआ है।

तभी काल बैल बज उठी ——
ट्रन...ट्रन...ट्रन...
देखो, शायद बच्चे आ गये हैं।

राधादेवी ने दरवाजा खोला।
अरे, यह तुम दोनों को क्या हुआ ?
बहुत नींद आ रही है मां। कल सुबह सब कुछ बतायेंगे।

राम, रहीम का हाथ थाम अपने कमरे की ओर बढ़ा।
हमें भूख नहीं है।
क्या तुम दोनों भोजन नहीं करोगे ?
जरूर कोई चक्कर मालूम पड़ता है।

यह इन दोनों ने कैसी हालत बना रखी है। जरूर कोई बात है। आप पूछिये न ?
अभी उन्हें परेशान न करो, सुबह पूछेंगे।

तुमने उन्हें सबकुछ बताया क्यों नहीं ?
बेकार परेशान होते। सुबह बता देंगे। चलो अब चुपचाप सो जाओ।

जल्दी ही दोनों गहरी नींद सो गये, लेकिन रहीम को सपने में भी भूतमहल दिखाई देता रहा।

तभी हवा के एक तेज झोंके से राम की नींद खुल गयी।
हवा !
ओह ! खिड़की भी खुली है, लेकिन मैं तो बन्द करके सोया था।

डॉ. शैतान कौन था और उसे बच्चों से दुश्मनी क्यों थी ?
भूत महल का रहस्य क्या था ?
डॉ. शैतान कौन-सा प्रतिशोध लेना चाहता था ?
ड्राक्यूला बालक का क्या हुआ ? क्या वह राम-रहीम का शिकार करने में सफल हुआ ?
क्या राम-रहीम भूत महल के रहस्य का भंडा फोड़ करने में सफल हुए ?
सब कुछ जानने के लिये पढ़ें : मनोज चित्र-कथा के आगामी सैट में
ड्राक्यूला बालक